शोध पात्रता प्रवेश परीक्षा पाठ्यक्रम 2017

संस्कृत में शोध पद्धति

प्रथम खंड

1. शोध की अवधारणा– अनुसंधान, शोध, अन्वेषण, गवेषण अनुशीलन, खोज, मीमांसा, सर्वेक्षण आदि।
2. शोध का स्वरूप, व्याप्ति, अर्थ एवं परिभाषा
3. शोध की अवधारणा एवं महत्व (औचित्य)
4. **शोध का प्रयोजन–**
    - ज्ञान की सीमा का विस्तार
    - वैज्ञानिक पद्धति का निर्धारण और प्रशिक्षण
    - अर्थ–प्राप्ति
    - कीर्ति कामना
    - शुद्ध सत्यन्वेषण की अदम्य लालसा की तृप्ति
5. **शोध का उपदेश एवं लक्ष्य–**
    - मौलिक एवं उच्चतम नवीन तथ्यों का उद्‌घाटन
    - किसी निर्माण को निश्चित करना
    - मानवीय चिंतन की प्रवृत्ति का विकास और परिष्कार
    - अज्ञात सत्य की खोज करना
    - भौतिक और मानसिक कल्याण
    - विशिष्ट ज्ञानप्राप्ति और ज्ञानक्षेत्र की सीमा का विस्तार
    - विश्रृंखलित तत्वों का संयोजन
    - समस्याओं का समाधान
    - अनुपलब्ध तथ्यों का अन्वेषण
    - उपलब्ध तथ्यों और सिद्धांतों की पुनःस्थापना
    - मौलिकता का प्रतिपादन
    - वैज्ञानिक पद्धति का अनुसरण।
6. **शोध प्रक्कल्पना (परिकल्पना)**

विषय चयन–विषय की उपयुक्तता, अन्वेषक की रुचि, अन्वेषण के ज्ञान की परिधि और क्षमता सामग्री की सुलभता, निर्देशक की योग्यता तथा विषय की उपयोगिता।

प्राक्कल्पना–पूर्व कल्पना

सामग्री सङ्कलन

विश्लेषण एवं निष्कर्ष।

7. **प्राक्कल्पना निर्माण प्रक्रिया**–तथ्य सिद्धांत और प्राक्कल्पना सिद्धांत, स्थिति, आवश्यकता क्षेत्र उपयोगिता एवं महत्व, अपेक्षित गुण, सावधानियां।
8. **शोध के साधन–**

प्रक्रिया–कलात्मक–चित्र मूर्ति मनसस्वरूप अंकलन (कल्पना)

वैज्ञानिक–तथ्यों का संग्रह एवं संयोजन

प्रविधि–निरीक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली, संख्याशास्त्री, प्रयोजन, ग्रंथालय, सामग्री, पत्र–पत्रिकाएं, ध्वनि मुद्रण, चित्रीकरण इण्टरनेट।

तथ्य– भाष्य, वार्तिक, टीका विवरण, वृत्ति।

9. शोध पद्धति–

तुलनात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक, वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, सर्वेक्षणात्मक

10. शोध की प्रकृति एवं प्रभाव– प्राकृतिक–प्रभावगत– सजातीय, विजातीय

जीवन वृत्ति–आलोचनात्मक, भावतत्त्व, कल्पनातत्व, शैली तत्त्व, विचारतत्त्व

प्रवृत्तिगत–परंपरागत, नवीन

11. शोध के भेद– उद्देश्य, कला और प्रयोग उद्देश्य–सिद्धांत निर्माण, व्यावहारिक अनुप्रयोग।

- काव्य रूप / साहित्यिक / काव्यनुसंधान
- शास्त्ररूप / शास्त्रानुसंधान
- पुराण या इतिहास रूप / ऐतिहासिक
- दर्शनपरक / दार्शनिक / मीमांसा
- भाषाशास्त्री / भाषावैज्ञानिक / ध्वनिविज्ञान

12. शास्त्रीय अनुसंधान –

साहित्यिक (अ) साहित्य शास्त्रीय– वैचारिक

1. परिस्थितिगत
2. दार्शनिक

(ब) काव्यशास्त्री– भारतीय– रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य

पाश्चात्य– प्लेटो, अरस्तू

वैज्ञानिक– ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ, लिपि, शैली इति।

13. शोध संबंधित साहित्य सामग्री संग्रह–

- प्रकाशित साहित्य
- हस्तलिखित
- शिष्ट–गद्य, पद्य
- लोक साहित्य–गद्य एवं पद्य
- मौलिक ग्रंथ–गद्य एवं पद्य

सावधानियां–अनिवार्य सहायक एवं उपकारक। मुदित, अमुद्रित, शिलालेख, शोधकाव्यग्रंथ, काव्यशास्त्र इतिहासादि

14. शोध के विविध क्षेत्र

- विशिष्ट कालखंड का अध्ययन– परंपरा, परिस्थिति और प्रकृति
- साहित्यिक / रचनाकार का अध्ययन–साहित्यकार का जीवन परिचय, व्यक्तित्व, कर्तत्व, तत्कालीन परिस्थित का प्रभाव अंतरंग–बहिरंग परीक्षण, देशी–विदेशी भाषा मतवाद का प्रयोग।
- विशिष्ट साहित्य विधा–नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध।
- विविध साहित्य संप्रदाय– उद्भव, विकास, उद्भव के कारण, प्रभाव, प्रवर्तक, समर्थक, विशेषता परिस्थितियों का प्रभाव लेखक कवि।
- रचना आदि–प्ष्ठिभूमि, कालखण्ड, कथानक उद्देश्य।

15. **शोध विधि**–पहेलियां, सूत्र, व्युत्पत्ति, कथा एवं आख्यान (उपदेशात्मक आख्यान, कार्यकारणता के प्रतिपादन के लिए आख्यान, व्यङ्ग्य कथन के लिए आख्यान, अर्थवाद के प्रतिपादन हेतु आख्यान) दृष्टांत विधि समन्वय विधि, आत्मोक्ति विधि, प्रयोजन विधि, प्रतिगमन विधि, व्याख्यात्मक विधि, संवाद विधि।

16. **अनुसंधाता के विशिष्ट गुण**– प्रबल जिज्ञासा

- अनुकूल मनोवृति एवं अभिरुचि
- समुन्नत बौद्धिक स्तर
- प्रतिभा–कायित्री (कवियों एवं रचनाओं की) ग्राहयित्री (समालोचकों और व्याख्याकारों की)
- लगन, तत्परता और सहिष्णुता।

17. **अनुसन्धान के हेतु**–

- प्रतिभा कारयित्री और भावयित्री
- निपुणता नैपुण्य
- अभ्यास पुनः आरंभ श्रवण, मनन, निदिध्यासन।

18. **अनुसन्धाता की योग्यता**

- शैक्षिक योग्यता
- जिज्ञासा उत्कट अभीप्सा
- रुचि और तत्परता
- गृहीत विषय का ज्ञान
- ज्ञान के विस्तार की उत्कट अभिलाषा
- कार्यसंलग्नता एवं धैर्यशीलता
- दृढ इच्छाशक्ति
- श्रमशीलता एवं तार्किकता
- निरपेक्षता, विषयपरकत्ता
- सारग्राहिता एवं लेखन क्षमता
- कृतज्ञता एवं निष्काम कर्मठता, तटस्थता
- स्वाध्यायशीलता– अवृत्त सत्य का अन्वेषण की अभिलाषा
- शङ्काशीलता
- वैचारिक स्पष्टता एवं निर्णयात्मकता
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- क्षमता एवं सामर्थ्य
- स्वास्थ्य एवं बाह्य परिस्थितियों की अनुकूलता
- भाषा एवं अभिव्यक्ति पर अधिकार।

19. **अनुसन्धाता की दृष्टि**– आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी, ज्ञानी (श्रद्धा, संयम और तत्पर) विषय निर्वाचन,विषय–विश्लेषण, शिल्प–विधि, पुस्तकालय, निर्देशन व्यवस्था और निर्देशक, प्रशिक्षण केन्द्र।

20. निर्देशक के गुण–

- शैक्षिक योग्यता
- संचय एवं तत्परता
- निर्दिष्ट विषय का सामान्य ज्ञान
- वैज्ञानिक दृष्टि
- स्वयं अध्ययन
- युक्तिमत्ता
- भाषा एवं विषय का उचित ज्ञान
- तटस्थता।

21. अनुसन्धाता एवं निर्देशक में समन्वयन– प्रस्तावित शोधकार्य की रूपरेखा समस्या, आवश्यकता, उपलब्ध साहित्य, उपयुक्त पद्धति, अध्यायों का वर्गीकरण, शोधकार्य की प्रमुख उपलब्धियों तथा समसामयिक उपयोगिता सूची इत्यादि।

22 शोध–प्रबन्ध के प्रमुख भाग– शीर्षक संक्षिप्त रूप में

- **पूर्वानुबन्ध**– प्राक्कथन, विषयसूची आदि।
- **मध्यानुबंध**– शोध–प्रबन्ध का मुख्य भाग।
- **पश्चानुबन्ध** –परिशिष्ट ग्रन्थसूची (अकारादि क्रम से)

23. मुख्य कलेवर– मुख पृष्ठ, प्राक्कथन, भूमिका, प्रस्तावना, उपक्रमाध्याय अथवा प्रारम्भिक अध्याय, संकेत सूची अथवा संक्षेप सूची विषयसूची रूपरेखा, मुख्य विषय विवेचन सम्बन्धी अध्याय, अनुक्रमणिका आवश्यक शब्दों या विषयों या उद्धरणों से ग्रन्थ–सूची शोध–पत्र–पत्रिका सूची इत्यादि।

24. शोध कार्ड– शीर्षक, उपशीर्षक ग्रन्थ सन्दर्भ, अवतरण, टिप्पणी प्रतिपादन में तुलना, समीक्षा निष्कर्ष।
कार्ड पद्धति– अध्याय एवं शीर्षक
नोट्स– प्रत्येक आयाय के शीर्षक

25. समग्री स्रोतों एवं सन्दर्भों का प्रस्तुतीकरण–

- सन्दर्भ संकेतों के पुनः पुनः प्रयोग हेतु नवीन विकसित संकेत सारिणी।
- आवश्यक सूचना हेतु पाद टिप्पणी।
- पारिभाषिक एवं लाक्षणिक प्रयोग के लिए परिशिष्ट।

26. शोध–प्रबन्ध की भाषा– प्राञ्जल, सुबोध शास्त्रीय लाक्षणिक, सन्तुलित और वैज्ञानिक तथा व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध और परिनिष्ठित ।

27. साहित्यिक आलोचना– कृति का अर्थ, कृति की व्याख्या, निष्कर्ष एवं मूल्याङ्कन।

वेद

ऋग्वेद–वरुणसूक्त (1.25), सूर्यसूक्त (1.115), उषस्सूक्त (3.61) पर्जन्य (5.83) सरमा–पणिसंवाद (1. 108), अथर्ववेद–राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (19.53) शुक्लयजुर्वेद अध्याय 34 ऋग्वेद भाष्यभूमिका–सम्पूर्ण, ऋग्वेद–इन्द्रसूक्त (1.32) अश्विनौसूक्त (1.116), अग्निसूक्त (1.143), सवितासूक्त (4.45) नासदीयसूक्त (10.129) उपनिषद् तैत्तिरीयोपनिषद्–शीक्षावल्ली वैदिक व्याकरण वैदिक शब्दरूपों की विशेषताएं तुमर्थक प्रत्यय लेट् एवं लुङ् लंकारों के भेद। ऋग्वेद संहिता विश्वेदेवा सूक्त (1.89) विश्वामित्र नदी संवादसूक्त (3.33) इन्द्रसूक्त (6.27) अग्निसूक्त (7.4) सोमसूक्त (8.48) शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता प्रथम अध्याय अथर्ववेद संहिता दीर्घायुप्राप्ति सूक्त (2.4) कृषिसूक्त (3.17) ब्रह्मणस्पति (2.23) सवितृसूक्त (5.82) आप्रीसूक्त (7.2) इन्द्रावरूणसूक्त (7.83) ज्ञानसूक्त ()10.71 शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनसंहिता द्वितीय अध्याय अथर्ववेद संहिता शालानिर्माणसूक्त (3.12) वनस्पति सूक्त कृषिसूक्त (8.56) अर्थसंग्रह। वैदिक यज्ञ एवं परिभाषित शब्द परिचय ऋक्प्रातिशारव्य, 1–3 पटल, निरूक्त, (1,2 एवं 7वॉ अध्याय) बृहद् देवता प्रथम अध्याय पारस्करगृह्मसूत्र सिद्धान्तकौमुदी स्वर वैदिक प्रकरण निम्नलिखित सूत्र –धातोः अनुदात्तै च (6.1190) लिति (6.1.193) कर्षात्वतोघञोऽन्त उदात्तः (6.1.159) समासस्य (6.1.223) बहुब्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् (6.2.1) दयाद्यं दायादे (6.2.5) तिङ्ङतिङ (8.1.28), नालुट् (8.1.29) गतिर्गतौ (8.1.70) तिडिचोदात्तवति (8.1.71), बृहद्देवता प्रथम अध्याय वैदिक छन्दों का सामान्य परिचय मूल सात छन्द गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप त्रिष्टुप् जगती बृहती पंक्ति।

व्याकरण

तिङन्त–भ्वादिगण की भू एवं धातु तथा शेषगणों की प्रथम–प्रथम धातुओं की रूपसिद्धि। कृदन्त। णिज्न्त सन्नन्त् यङन्त् यङलुक् नामधातु, पुत्रीयति, शब्दायते आत्मनेपद, परस्मैपद भावकर्म भूयते, कर्मकर्तृ लकारार्थ। तद्धित, अपत्यार्थ, रक्ताद्यर्थ, पातुरर्थिक, शैषिक, भावकर्माद्यर्थ, भवनादि, मत्वर्थीय, प्राग्दिशीय प्रागिवीय। सिद्धान्तकौमुदी–कारकप्रकरण। वरदराजाचार्य–मध्यसिद्धान्त कौमुदी व्याकरण महाभाष्य (प्रथम एवं द्वितीय आहूनिक) भर्तृहरि–वाक्यपदीयप्रथमकाण्ड, नागोजिभट्ट–परिभाषेन्दुशेखर–प्रथमतन्त्र परिभाषा 1–10

भारतीय दर्शन

केशव मिश्र–तर्कभाषा (प्रामाण्यवाद), सम्पूर्ण, ईश्वरकृष्ण–सांख्यकारिका (सम्पूर्ण), सदानन्द–वेदान्तसार

न्याय वैशेषिक दर्शन

गौतम न्यायसूत्र–वात्स्यायन भाष्य सहित प्रथम अध्याय, प्रश्स्तपाद भाष्य (पदार्थधर्मसंग्रह) (द्रव्यखण्ड), विश्वनाथ–सिद्धान्त मुक्तावली (शब्दखण्ड)

योग, आगम एवं बौद्ध दर्शन

पातंजलयोगसूत्र–गौड़पाद–माण्डूक्यकारिका (प्रथम एवं चतुर्थ प्रकरण), क्षेमराज–प्रत्यभिज्ञाह्रदयम्।

वेदान्त एवं मीमांसा

बादरायण– ब्रह्मसूत्र (चतुःसूत्री शांकर भाष्य सहित) वेदान्तपरिभाषा–प्रत्यक्ष, विषय एवं प्रयोजन परिच्छेद मात्र। नारायण–मानमेयोदय (मेयखण्ड)

साहित्य–काव्य एवं काव्यशास्त्र

मम्मट–काव्यप्रकाश कुन्तक–वक्रोक्तिजीवितम् आनन्दवर्धन, ध्वन्यालोक, काव्य–श्रीहर्ष–नैषधीयचरितम्, प्रथम सर्ग, त्रिविक्रमभट्ट–नलचम्पू (आर्यावर्त वर्णन पर्यन्त) मेघदूत, बुद्धचरितम–प्रथमसर्ग, शूद्रक–मृच्छकटिकम हर्षदेव–रत्नावली, भवभूमि–उत्तररामचरितम्, नाट्यशास्त्र–धनञ्जय–दशरूपकम् (सम्पूर्ण), बाणभट्ट–हर्षचरितम् दण्डी–दशकुमारचरितम् (विश्रुत चरित्र मात्र)

भाषा विज्ञान एवं मध्य भारतीय आर्य भाषाएँ

भाषाशास्त्र–भाषा की परिभाषा उत्पत्ति क्षेत्र, विशेषताएं, भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन, भाषा, विभाषा, बोली आदि में अन्तर। भाषिक परिवर्तन, उसके कारण तथा दिशायें। भाषाओं का वर्गीकरण,–भारोपीय परिवार। भारतीय आर्यभाषाओं का विकास।

भाषा के घटक–स्वनिम (फोनिम), रूपिम (मार्फीम), पादिम (टैक्सीम), अर्थिम (सेमेण्टिम), मानस्वर (कार्डिनल वावेल), वाग्ययंत्र, संस्कृत भाषा की रूप प्रक्रियात्मक संरचना। ध्वनि नियम। ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर, तालव्य , मूर्धन्य, अर्थपरिवर्तन–कारण एवं दिशायें।

पालि– धम्मपदसंगहो, बाबेरूजातकम्, पटिच्चसमुप्पपदो, मायादेवियासुपिन, चत्तारि अरियसच्चानि तथा तथागतस्स पच्छिमावाचा।

प्राकृत–कर्पूरमंजरी, स्वप्नवासवदत्तम् वसुदत्तकथा, अशोक – अभिलेख तथा गिरनार अभिलेख।

अपभ्रंश– दोहाकोश, सन्देशरासक, अपभ्रंशमुक्तकसंग्रह। पाली, प्राकृत एवं अपभ्रंश की व्युत्पत्ति, बोलियॉ विशेषताएँ साहित्य एवं प्रदेश।